

दुआ-68**दुआए रोज़े शम्बा – सनीचर****बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

मदद अल्लाह तआला के नाम से जो हिफ़ाज़त चाहने वालों का कलमए कलाम और पनाह दूँढने वालों का विर्दे ज़बान है और खुदावन्दे आलम से पनाह चाहता हूँ। सितमगारों की सितमरानी, हासिदरों की फ़रेबकारी और ज़ालिमों के जुल्मे नादवा से। मैं उसकी हम्द करता हूँ (और सवाल करता हूँ के वह इस हम्द को) तमाम हम्द करने वालों की हम्द पर फ़ौक्रियत दे,

बारे इलाहा! तू एक अकेला है। जिसका कोई शरीक नहीं है और बगैर किसी मालिक के बनाए, तू मालिक व फ़रमानरवा है, तेरे हुक्म के आगे कोई रोक खड़ी नहीं की जा सकती और न तेरी सलतनत व फ़रमानरवाई में तुझ से टक्कर ली जा सकती है। मैं तुझसे सवाल करता हूँ के तू अपने अब्दे खास और रसूल (स0) हज़रत मोहम्मद (स0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपनी नेमतों पर ऐसा शुक्र मेरे दिल में डाल दे जिससे तू अपनी खुशनुदी की आखिरी हद तक मुझ पहुंचा दे और अपनी नज़रे इनायत से इताअत, इबादत की पाबन्दी और सवाब का इस्तेहकाक हासिल करने में मेरे मदद फ़रमाए और जब तक मुझे ज़िन्दा रखे, गुनाहों से बाज़ रखने में मुझ पर रहम करे, और जब तक मुझे बाकी रखे इन चीज़ों की तौफ़ीक दे जो मेरे लिये सूदमन्द हों और अपनी किताब के ज़रिये मेरा सीना खोल दे और उसकी तिलावत के वसीले से मेरे गुनाह छांट दे और जान व ईमान की सलामती अता फ़रमाए और मेरे दोस्तों को (मेरे गुनाहों के बाएस) वहशत में न डाले और जिस तरह मेरी गुज़िश्ता ज़िन्दगी में एहसानात किये हैं उसी तरह बक़िया ज़िन्दगी में मुझ पर अपने एहसानात किये हैं उसी तरह बक़िया ज़िन्दगी में मुझ पर अपने एहसानात की तकमील फ़रमाए। ऐ रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।